आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति

सह संरक्षक
प्रो. चन्दा बैन
अधिष्ठाता - भाषा अध्ययनशाला

निदेशक
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष - संस्कृत विभाग

संयोजक
डॉ. शशिकुमार सिंह
8989889371

सह-संयोजक
डॉ. रामहेत गौतम
8827745548

सचिव
डॉ. नौनिहाल गौतम
9826151335

सह-सचिव
डॉ. किरण आर्या
9479983604

कार्यकारिणी

डॉ. आर. वैकटमुनि रेड्डी, डॉ. संजय नैनवार,
डॉ. हिमांशु कुमार, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. आफसेज बेगम,
डॉ. अरविन्द कुमार गौतम, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी, डॉ. बबलू रे, डॉ. वसीम अनवर,
डॉ. वंदना रागौरिया, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. वीरेन्द्र मटसेनिया, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ,
डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बारोलिया, डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव,
डॉ. आफरीन खान, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. योगेश कुमार पाल, डॉ. आयुष गुप्ता
सुश्री शिवानी खरे डॉ. नवीन सिंह, डॉ. रजनीश अवाहरि
डॉ. ऋषभ भारद्वाज, डॉ. अवधेश कुमार, डॉ. शिवशंकर यादव, माधवचन्द्र
प्रवीण कुमार, चन्द्रपाल लोधी, संजू कनौजिया, भूपेन्द्र लोधी, शैलेश तिवारी,
गुलशन कुमार, मिन्टु मंडल, दिपाली बाहादुर, सुधांशु कुमार, नैनिका लुहार
चित्रांश कन्हैआ, सौरभ मिश्र, तन्मय दास, भगीरथ बाढ़ई,
दिग्विजय तिवारी, दीक्षा साबले

बुक-पोस्ट

राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी

भारतीय ज्ञान परम्परा में पुरुषार्थ चिन्तन

10 - 11 मार्च 2025

(उभयविध माध्यम / Hybrid Mode)

प्रति,

_____

_____

_____

प्रेषक
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
निदेशक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
9425656284, sanskritsagar1946@gmail.com

राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी

भारतीय ज्ञान परम्परा में पुरुषार्थ चिन्तन

10 - 11 मार्च 2025

(उभयविध माध्यम / Hybrid Mode)

आयोजक
संस्कृत विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

सहयोग
शोध एवं विकास शाखा और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

राष्ट्रिय सङ्गोष्ठी
भारतीय ज्ञान परम्परा में पुरुषार्थ
10 - 11 मार्च 2025

हमारा विश्वविद्यालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (पूर्व नाम : सागर विश्वविद्यालय) की स्थापना 18 जुलाई 1946 को भारत के महान् शिक्षाविद् और प्रख्यात विधिवेत्ता डॉक्टर हरीसिंह गौर के द्वारा की गई है। कुल 1300 एकड़ के वृहद् भू-भाग में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में घोषित हुआ। वर्तमान में 11 संकायों और 38 विभागों से युक्त इस विश्वविद्यालय में एजुकेशन मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र और यू.जी.सी. मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र भी हैं। इसके अतिरिक्त एक समृद्ध पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास, बैंक, डाकघर, उच्च श्रेणी का अतिथि गृह, अस्पताल तथा शिक्षकों और कर्मचारियों के आवास की सुविधा उपलब्ध है।

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग देश के प्रतिष्ठित संस्कृत विभागों में से एक है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही 1946 में संस्कृत विभाग की स्थापना हुई जिसमें साहित्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आधुनिक संस्कृत साहित्य, वेद, व्याकरण तथा दर्शन के क्षेत्र में शोध के नये आयाम उद्घाटित हुए हैं। विभाग से त्रैमासिक संस्कृत शोध पत्रिका 'सागरिका' तथा सौंदर्यशास्त्र एवं रंगमंच की त्रैमासिक शोध पत्रिका 'नाट्यम्' (यूजीसी केयर लिस्टेड) निरन्तर प्रकाशित हो रही है। विभाग के संस्कृत परिषद् द्वारा लगभग 75 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 160 शोधार्थी पी-एच.डी. उपाधि तथा 6 मनीषी डी.लिट् उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. रामजी उपाध्याय, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी आदि भारत सरकार के राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किये गये हैं। विभाग के द्वारा अब तक एक अन्तराष्ट्रिय सङ्गोष्ठी के साथ ही 50 से अधिक राष्ट्रीय सङ्गोष्ठियों और अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। विभाग के शिक्षकों द्वारा 200 से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया गया है। विभागीय पुस्तकालय में 5000 से अधिक मूल्यवान् पुस्तकों का संग्रह है। विभाग के अंतर्गत संचालित पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र में 6000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं।

सङ्गोष्ठी का उद्देश्य

अप्रतिम प्रज्ञा की प्रतीक भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान और विज्ञान, इहलौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म, त्याग और भोग का अद्भुत समन्वय दिखलाई पड़ता है। भारत में ज्ञान की परम्पराएं और प्रथाएं प्राचीन काल से ही मानव जीवन को प्रोत्साहित करती रही हैं। पुरुषार्थ विवेचन भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रमुख प्रतिपाद्य रहा है। पुरुषार्थ मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की आधारभित्ति है। इसी के माध्यम से मनुष्य मनोयोगपूर्वक अपने जीवन के विभिन्न कर्तव्यों का पालन करता है। प्राचीन भारतीय ऋषियों-मनीषियों ने मानव जीवन को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और नैतिक दृष्टि से समुन्नत बनाने के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को उपदिष्ट किया है। पुरुषार्थ ही मानव-जीवन के लक्ष्य साधक होते हैं। जीवन के विभिन्न पड़ावों पर पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की महनीयता के कारण पुरुषार्थ चिंतन को जीवन- दर्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में इन पुरुषार्थों पर अनेकानेक शास्त्रों का प्रणयन हुआ। धर्म पुरुषार्थ का उल्लेख करते हुए मनुस्मृति में महाराज मनु ने वेद को धर्म का मूल माना है, 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। भर्तृहरि ने यस्यास्ति वित्तं सः नरः कुलीनः के द्वारा अर्थ को मनुष्य कीर्ति का आधार बताया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं को धर्म से अविरुद्ध कामरूप कहा है - 'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ'। मनुष्य अपने जीवन में जिस गंतव्य स्थान पर पहुंचकर आत्मज्ञान की सहायता से जन्म मरण रूपी संसार सागर जीवन से पार हो जाता है उसे मोक्ष नामक पुरुषार्थ कहते हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन का परम उद्देश्य मानकर आचरण करें और धर्मपूर्वक अर्थ का उपार्जन कर अपनी कामना की पूर्ति करते हुए सभी बंधनों से मुक्तहोकर मोक्ष को प्राप्त करें। राष्ट्रीय संगोष्ठी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा में मानव जीवन के उन्नायक पुरुषार्थ चतुष्टय के महत्व को सुधी चिंतकों एवं मर्मज्ञों के द्वारा विमर्शित और विश्लेषित किया जाएगा।

सङ्गोष्ठी के प्रस्तावित उपविषय

- वेदों में पुरुषार्थ चिन्तन
- ब्राह्मण ग्रंथों में पुरुषार्थ चिन्तन
- आरण्यकों में पुरुषार्थ चिन्तन
- उपनिषदों में पुरुषार्थ चिन्तन
- वेदांगों में पुरुषार्थ चिन्तन
- सूत्र ग्रंथों में पुरुषार्थ चिन्तन
- रामायण में पुरुषार्थ चिन्तन
- महाभारत में पुरुषार्थ चिन्तन
- स्मृति ग्रंथों में पुरुषार्थ चिन्तन
- पुराण ग्रंथों में पुरुषार्थ चिन्तन
- दर्शन ग्रंथों में पुरुषार्थ चिन्तन
- महाकाव्यों में पुरुषार्थ चिन्तन
- खण्डकाव्यों में पुरुषार्थ चिन्तन
- गद्य साहित्य में पुरुषार्थ चिन्तन
- पद्य साहित्य में पुरुषार्थ चिन्तन
- चम्पू काव्यों में पुरुषार्थ चिन्तन
- नाट्य साहित्य में पुरुषार्थ चिन्तन
- श्रीमद्भगवद् गीता में पुरुषार्थ चिन्तन
- लोक साहित्य में पुरुषार्थ चिन्तन
- भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चिन्तन
- भारतीय ऋषियों एवं ऋषिकाओं का पुरुषार्थ चिन्तन
- अन्य भारतीय साहित्य में पुरुषार्थ चिन्तन

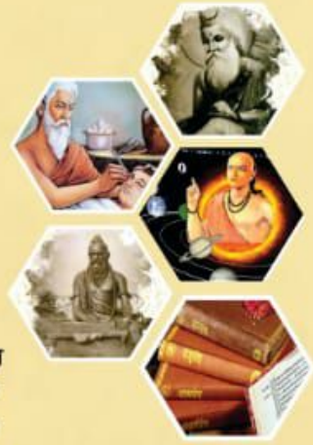

आवश्यक निर्देश

- संगोष्ठी ऑफलाइन एवं ऑनलाइन उभयविध माध्यमों (Hybrid mode) में आयोजित होगी।
- पंजीकृत शिक्षक एवं शोधार्थी संगोष्ठी में प्रतिभाग कर सकते है।
- संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए प्रतिभागिओं को Google Form भरना अनिवार्य होगा।
- पंजीयन शुल्क का प्रतिभागियों के लिए स्वरुप निम्नवत होगा - शिक्षक - Rs. 900, शोधार्थी - Rs. 600
- प्रतिभागियों के लिए दोपहर-भोजन की व्यवस्था रहेगी।
- आवागमन एवं आवास की व्यवस्था प्रतिभागियों को स्वयं करनी होगी।
- प्रतिभागियों के द्वारा अपना शोधपत्र Unicode/Kokila में Font-14 साइज में टाइप कर दिनांक 09.03.2025 तक dr.shashiksingh007@gmail.com अथवा whatsapp number 8989889371 पर जमा करना अनिवार्य होगा।

भुगतान करने हेतु
I) UPI ID: 40520720280a@sbi II) QR Code
बैंक खाता विवरण
Bank Name: SBI Bank UTD Branch, Sagar, M.P.
A/c No.: 40520720280
IFSC: SBIN0001143

आमंत्रित अतिथि वक्ता

- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व कुलपति
  केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. विनोद कुमार मिश्र, कुलपति
  रानी अवन्ती बाई लोधी विश्वविद्यालय, सागर
- प्रो. रामनाथ झा, आचार्य
  जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी, पूर्व आचार्य (राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित)
  रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर मध्यप्रदेश
- प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, पूर्व आचार्य
  काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. इला घोष, पूर्व आचार्या
  रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
- प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा, आचार्य
  डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
- डा. कृष्ण मोहन पाण्डेय, सह आचार्य
  जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. संजय कुमार, सह आचार्य
  दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

परामर्श दात्री समिति

- प्रो. श्वेता यादव
- प्रो. नवीन कांगो
- प्रो. अजीत जायसवाल
- प्रो. भवतोष इन्द्रगुरु
- प्रो. दिवाकर शुक्ला
- प्रो. रश्मि सिंह
- प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत
- प्रो. नागेश दुबे
- प्रो. बृजेशकुमार श्रीवास्तव
- प्रो. अनिल कुमार जैन
- प्रो. राजेन्द्र यादव
- डॉ. अनिल कुमार तिवारी